मन होता है चिल्ला कर कहूं 'चक दे इंडिया'

आनंद वर्द्धन
प्रति कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

ओलंपिक खेल फिर से हो रहे हैं. ओलंपिक के समाचार देखते सुनते याद हो आई बारह साल पहले के ओलंपिक खेलों की. मैं उस समय ग्रीस से सटे देश बुल्गारिया में रह रहा था. ओलंपिक जुलाई में था पर तमाम छोटे-छोटे देशों ने बहुत पहले से तैयारी शुरू कर दी थी. ओलंपिक के पहले हर खेल की प्री ओलंपिक प्रतिस्पर्धाएं होती हैं और उनमें विजेता प्रतिभागी टीमें ओलंपिक में भाग ले पाती हैं. बुल्गारिया में रेसलिंग यानी कुश्ती का प्री ओलंपिक फरवरी में हुआ. वहां भारत की टीम भी पहुंची थी प्री ओलंपिक में भाग लेने के लिए.

बुल्गारिया में भारतीय दूतावास में पदस्थ प्रथम सचिव राजकुमार सिंह की खेलों में गहरी रुचि थी. उन्होंने मुझसे भी कहा कि भारतीय दल की अगवानी हेतु हवाई अड्डे चलना है. नियत समय पर भारतीय दूतावास का छोटा-सा स्टाफ (छह-सात लोग) सोफिया एयरपोर्ट पहुंचे. हमने भारतीय पहलवानों की अगवानी हाथ मिलाकर की. उनमें से एक दो व्यक्ति बाहर नहीं आ पाए थे क्योंकि उनका सामान नहीं मिल रहा था. हम सब बाहर लॉबी में उनका इंतजार करते रहे. इसी बीच अपने भारतीय पहलवानों से छिटपुट बातें भी होती रहीं. तभी एक यूरोपीय भिखारी भीख मांगते हुए पास आया. उसने एक बड़ी तख्ती पर कुछ लिख रखा था. अपने भारतीय पहलवानों में से एक ने मुझसे पूछा - ''सरजी ये के कै र्या है?''

मैंने बताया ''ये यहां का भिखारी है.'' अपने पहलवानों ने उसे आश्चर्य से ऊपर से नीचे तक देखा'और उनमें से एक अनायास बोल पड़ा. ''सर जी, इसका स्टैंडर (स्टैंडर्ड) तो हमसे भी अच्छा दिक्खे है.''

हम सब हंस पड़े. भिखारी आगे बढ़ गया पर मैं सोचने लगा कि अनायास कही गई बात में क्या कहीं कोई गहरी सच्चाई और दर्द नहीं छिपा है? तभी हमारे भारतीय पहलवानों में से एक ने पूछा ''सर जी यहां खाणे पीणे में क्या क्या मिले है. माने सब्जी भाजी....''

''मोटे.तौर पर सारी सब्जियां मिलती हैं, हां रोटी नहीं मिलेगी पर ब्रेड मिल जाएगी.''

''सो तो हम अपणा चूण (आटा) लेक्के आए हैं.''

''अच्छा तो कुक भी है आपके साथ.''

''ना जी ना, कैसा कुक्क, हमीं बनावेंगे रोटी सोट्टी.''

मैं भी कैसा मूरख हूं. यह कोई भारतीय क्रिकेट टीम थोड़े ही है जिसके लिए फाइव स्टार सुविधाएं हमेशा उपलब्ध रहती हैं. यह तो भारतीय पहलवानों की टीम है जो साथ में अपने लिए रोटी बनाने का आटा भी लेकर चलती है. उसे पहलवानी के गुर भी दिखाने हैं और अपने लिए खाना भी बनाना है.

मैं यह भी भूल रहा था कि भले ही ये यहां प्री ओलंपिक के लिए आए हैं पर इसके लिए इनको न जाने कितनी मशक्कत करनी पड़ी होगी. अव्वल तो ये कि ओलंपिक होने के कुछ महीने पहले इनकी याद हम सबको आती है. शायद इसलिए कि कम-से-कम ओलंपिक में हो रही अलग-अलग प्रतियोगिताओं में अपनी उपस्थिति तो दर्ज करा ही लें. बाकी तीन साढ़े तीन साल क्या जरूरत है इन्हें या इनके जैसे दूसरे खेलों के प्रतिभागियों को याद करने की.

बहरहाल, प्री ओलंपिक हुए. हम मुट्ठी भर भारतीय भी पहुंचे. वहां भारतीय राजदूत दिनकर खुल्लर भी आए. पर सोफिया शहर में पढ़ रहे भारतीय छात्रों में से एक भी नहीं था वहां क्योंकि वह क्रिकेट का खेल नहीं था.

हमारे भारतीय पहलवानों ने वहां पदक भी जीते. ओलंपिक में उनका आना तय हो गया था. हम लोगों ने अपने कैमरों से उनकी तस्वीरें खींचीं. मेरे साथ मेरा 13 साल का बेटा भी था. फोटो खींच लेने के बाद जब मैं चलने लगा तो उन्होंने कहा, ''सरजी इसकी एक कापी हमें भी भेज देणा.''

किस पते पर भेजता! विश्वस्तर के इन खिलाड़ियों से मिलकर हम लौट चले. हमारे कैमरे में उनकी तस्वीरें थीं. मैं चलते-चलते फिर पूछ बैठा. ओलंपिक के बाद क्या करेंगे.

''खेती'' जवाब सीधा सा था.

ओलंपिक के समाचारों के बीच ढूंढ़ रहा हूं अपने उन्हीं पहलवान दोस्तों को जो ओलंपिक के बाद फिर से जुट जाएंगे अपनी खेती में. मन होता है जोर से चिल्ला कर कहूं 'चक दे इंडिया'. ■■